RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER · ESTABLISHED 2004 · NEW DELHI · SEPTEMBER 2020 · PAGES 4 · PRICE 1/- · MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

श्री सिद्धि विनायक मंदिर में से संपन्न हुआ गणेशोत्सव

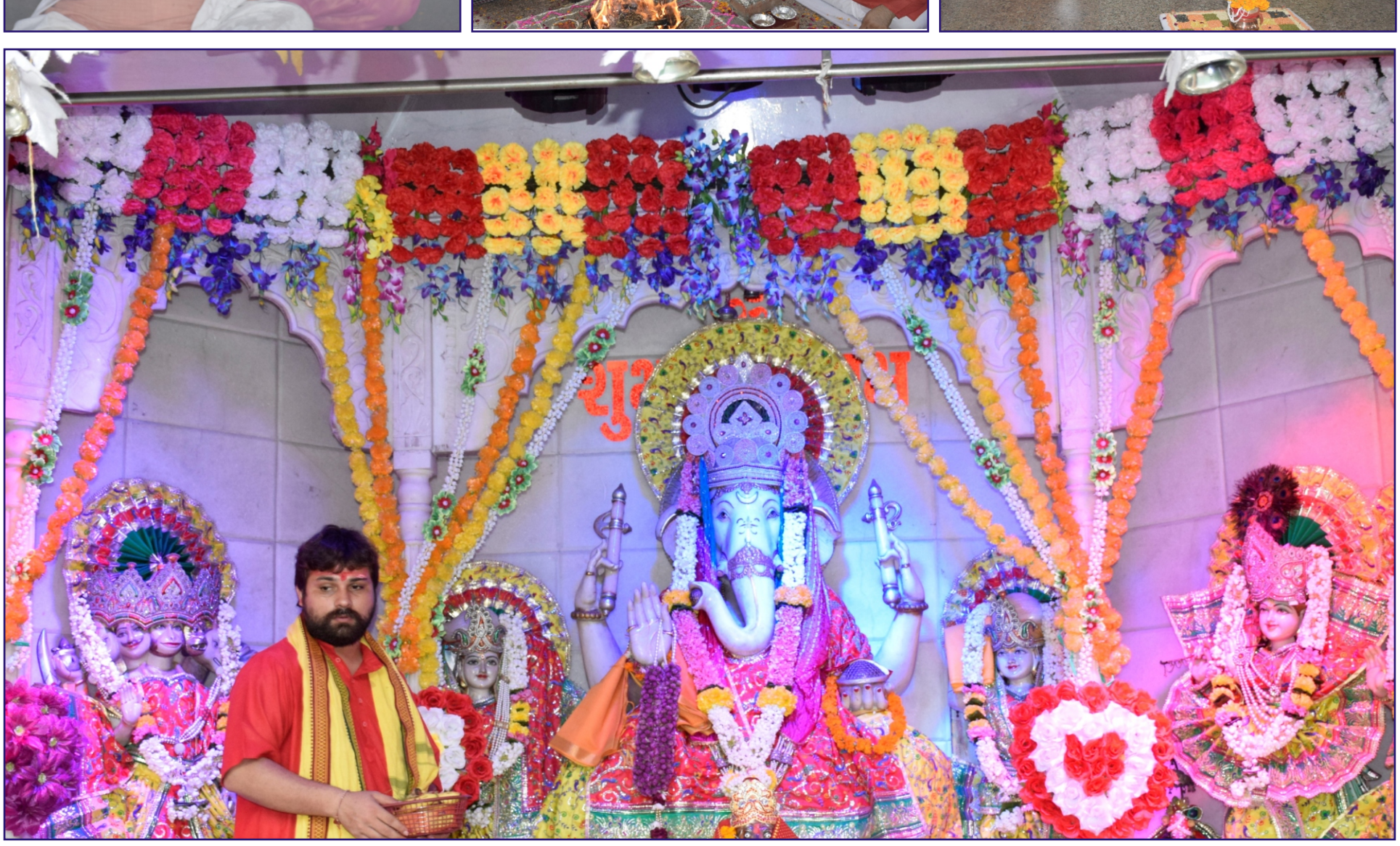

शिक्षक दिवस से जुड़ी ये 20 बातें

गुरू गोविन्द दोऊ खडे, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरू अपने गोविन्द दियो बताय।

अर्थात् गुरू और गोविदं (भगवान) ,के साथ खड़े हों तो किसे प्रणाम करना चाहिए, गुरू को अथवा गोविदं को? ऐसी स्थिति में गुरू के श्रीचरणों में शीश झुकाना उत्तम है जिनके कृपा रूपी प्रसाद से गोविन्द का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

गुरू बिन ज्ञान न उपजै, गुरू बिन मिलै न मोष।
गुरू बिन लखै न सत्य को गुरू बिन मिटै न दोष।।

कबीर दास जी कहते हैं – हे सांसरिक प्राणियों। बिना गुरू के ज्ञान का मिलना असम्भव है। तब तक मनुष्य अज्ञान रूपी अंधकार में भटकता हुआ मायारूपी सांसारिक बन्धनों में जकड़ा रहता है जब तक कि गुरू की कृपा प्राप्त नहीं होती। मार्ग रूपी में दिखलाने वाले गुरू हैं। बिना गुरू के सत्य एवं असत्य का ज्ञान नहीं होता। उचित और अनुचित के भेद का ज्ञान नहीं होता फिर मोक्ष कैसे प्राप्त होगा? अतः गुरू की शरण में जाओ। गुरू ही सच्ची राह दिखाएंगे।

गुरू पारस को अन्तरो, जानत हैं सब संत।
वह लोहा कंचन करे, ये करि लेय महंत।।

अथात् गुरू और पारस के अन्तर को सभी ज्ञानी पुरूष जानते हैं। पारस मणि के विषय जग विख्यात हैं कि उसके स्पर्श से लोहा सोने का बन जाता है किन्तु गुरू भी इतने महान हैं कि अपने ज्ञान में ढालकर शिष्य को अपने जैसा ही महान बना लेते हैं।

डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन को 1962 से शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने अपने छात्रों से जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की इच्छा जताई थी। शिक्षक दिवस से जुड़ी ये 20 बातें ध्यान देने योग्य हैं

1–1962 में देश के राष्ट्रपति बने डॉक्टर राधाकृष्णन एक महान शिक्षाविद् और शिक्षक के रूप में दुनिया भर में जाने जाते हैं।

2–डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन का मानना था कि देश में सर्वश्रेष्ठ दिमाग वाले लोगों को ही शिक्षक बनना चाहिए ।

3–डॉक्टर राधाकृष्णन के पिता उनके अंग्रेजी पढ़ने या स्कूल जाने के खिलाफ थे। वह अपने बेटे को पुजारी बनाना चाहते थे।

4–डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन बेहद ही मेधावी छात्र थे और उन्होंने अपनी अधिकतर पढ़ाई छात्रवृत्ति के आधार पर ही पूरी की।

5–सर्वपल्ली राधाकृष्णन छात्रों में इतने लोकप्रिय थे कि जब वह कलकत्ता जा रहे थे, उन्हें मैसूर विश्वविद्यालय से रेलवे स्टेशन तक फूलों की बग्घी में ले जाया गया था।

6–जानेकृमाने प्रोफेसर राधाकृष्णन के लेक्चर से इतने प्रभावित हुए, कि उन्होंने लंदन विश्वविद्यालय में उनके लिए चेयर स्थापित करने का फैसला कर।

7–शिक्षा के में डॉक्टर राधाकृष्णन के अभूतपूर्व योगदान के लिए 1931 में उन्हें ब्रिटिश सरकार ने नाइट के सम्मान से भी नवाजा।

8–वर्ष 2015–16 तक देश में कुल शिक्षकों की संख्या 42,74,206 है। इनमें राज्य सरकार और सर्व शिक्षको अभियान द्वारा नियुक्त शिक्षक शामिल हैं।

9–भारत में प्राथमिक महिला शिक्षकों की भागीदारी 2014 तक 49–49 फीसदी थी। जबकि माध्यमिक शिक्षको में यह भागीदारी 43–21 प्रतिशत थी।

10–दुनिया में सबसे ज्यादा महिला शिक्षक रूस में हैं। वर्ष 2014 में यहां 98–81 प्रतिशत प्राथमिक महिला शिक्षक थीं। इसके बाद ब्राजील 89–64 का नंबर आता है।

11–दुनिया के 100 से ज्यादा देशों में अलग–अलग तारीख पर शिक्षक दिवस मनाया जाता है। हालांकि विश्व शिक्षक दिवस 5 अक्टुबर को मनाया जाता है ।

12–यूनेस्को ने 1994 में शिक्षकों के कार्य की सराहना के लि, 5 अक्टुबर को विश्व शिक्षक दिवस के रूप में मनने को लेकर मान्यता दी थी।

13–अमेरिका में 1944 में मैटे वायटे वुडब्रिज ने सबसे पहले वकालत की। फिर 1953 में कांग्रेस ने मान्यता दी। 1980 में 7 मार्च को राष्ट्रीय शिक्षक दिवस के रूप में चुना गया। मगर बाद में मई के पहले मंगलवार को इसका आयोजन किया गया।

14–सिंगापुर में सितंबर के पहले शुक्रवार को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। जबकि अफगानिस्तान में पांच अक्टूबर को ही यह दिवस मनाया जाता है।

15–हैरी पॉटर सीरीज की लेखिका पहले जे.के. रोलिंग पुर्तगाल में बच्चों को पढ़ाया करती थीं।

16–यूनेस्को के मुताबिक वर्ष 2030 तक प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षक के लक्ष्य को पूरा करने के लिए 6–9 करोड़ शिक्षकों की जरूरत होगी।

17–सावित्रीबाई ज्योतिराव फुले को देश की पहली महिला शिक्षक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने लड़कियों की शिक्षक में अहम योगदान दिया था।

18–देश में वर्ष 2015–16 तक हर 23प्राथमिक, 37 उच्च माध्यमिक और 24 उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों पर एक–एक शिक्षक उपलब्ध है।

19–मानव संसाधन विकास मंत्रालय के मुताबिक 2015–16 में देश में 26,06,120 प्राथमिक शिक्षक थे।

20–देश में 1951 में 5,38,000 प्राथमिक शिक्षक थे, जिनमें 4,56,000 पुरुष शिक्षक और 82,000 महिला शिक्षक थीं।

प्रस्तुतिः-
राहुल मित्तल

THIS MONTH

September 8, 1883 - The Northern Pacific Railroad across the U.S. was completed.

*****

September 8, 1900 - A hurricane with winds of 120 mph struck Galveston, Texas, killing over 8,000 persons, making it the worst natural disaster in U.S. history. The hurricane and tidal wave that followed destroyed over 2,500 buildings.

*****

September 8, 1935 - Louisiana Senator Huey P. Long was shot and mortally wounded while attending a session of the state House of Representatives in Baton Rouge, Louisiana. He died two days later.

*****

September 8, 1941 - The German Army began its blockade of Leningrad, lasting until January 1944, resulting in the deaths of almost one million Russian civilians.

*****

September 8, 1974 - A month after resigning the presidency in disgrace as a result of the Watergate scandal, Richard Nixon was granted a full pardon by President Gerald R. Ford for all offenses committed while in office.

*****

September 9, 1776 - The United States came into existence as the Continental Congress changed the name of the new American nation from the United Colonies.

*****

Compilation:
Honey Shah

BASICS OF MEDIA

Master Control: Nerve center for all telecasts. Controls the program input, storage, and retrieval for on-the-air telecasts. Also oversees technical quality of all program material.

*****

Monitor:(1) Audio: speaker that carries the program sound independent of the line-out. (2) Video: high-quality television set used in the television studio and control rooms. Cannot receive broadcast signals.

*****

Aspect ratio: The width-to-height proportions of the standard television screen and therefore of all analog television pictures: 4 units wide by 3 units high. For DTV and HDTV, the aspect ratio is 16 × 9.

*****

Streaming: A way of delivering and receiving digital audio and/or video as a continuous data flow that can be listened to or watched while the delivery is in progress.

*****

Preview (p/v) Monitor: (1) Any monitor that shows a video source, except for the line (master) and off-the-air monitors. (2) A color monitor that shows the director the picture to be used for the next shot.

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

केरल : चलाकुडी में घूमने लायक पांच सबसे खूबसूरत सील

केरल के त्रिशूर जिले स्थित चलाकुडी एक खूबसूरत शहर है, जो अपने प्राकृतिक और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाता है। यह स्थल उन लोगों के लिए बेहद खास है जो प्रकृति से प्रेम करते हैं, और कुदरती आकर्षणों का दीदार करना चाहते हैं। घने जंगल, जलप्रपात, पहाड़ियां इस शहर को एक खूबसूरत पर्यटन स्थल बनाते हैं। यहां बहने वाले जलप्रपात और धार्मिक स्थल दूर दराज के पर्यटकों और श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करने का काम करते हैं। यहां आने का सबसे आदर्श समय अक्टूबर से लकर मार्च के मध्य का है, इस दौरान आप यहां अपने आनंद और रोमांच को दुगना कर सकते हैं। यहां घूमने–फिरने और देखने योग्य कई शानदार जगहे मौजूद हैं, जिन्हें आप चलाकुडी भ्रमण के दौरान देख सकते हैं। आइए जानते हैं विभिन्न पर्यटन आकर्षणों के साथ यह स्थल आपको किस प्रकार आनंदित कर सकता है।

चलाकुडी रिवर साइट चलाकुडी भ्रमण की शरुआत आप यहां की खूबसूरत और महत्वपूर्ण चलाकुडी नदी की सैर से कर सकते हैं। यह नदी केरल में तीन जीलों से होकर गुजरती है, एक पलक्कड़, दूसरा त्रिशूर और तीसरा एरनाकुलम । यह एक खूबसूरत नदी है जिसके अद्भुत दृश्यों पर्यटकों को काफी ज्यादा आनंदित और रोमांचित करने का काम करते हैं। यह नदी तमिलनाडु के अन्नामलाई क्षेत्र से निकलती है। यह नदी अपनी खास जैव विविधता के लिए जानी जाती है। यहां मछलियों की 152 प्रजातियां पाई जाती हैं, जिसमें से 89 ताजे पानी की प्रजातियां हैं। यहां के आसपास का नजारा बेहद आकर्षक है, जो पर्यटकों को काफी ज्यादा उत्साहित करने का काम करता है। एक शानदर सफर के लिए आप यहां का प्लान बना सकते हैं। वजहचल जलप्रपात चलाकुडी के पर्यटन आकर्षणों में आप यहां के आकर्षक जलप्रपातों की सैर का प्लान बना सकते हैं। वजहचल यहां का आकर्षक वाटरफॉल है, जो यहां के घने जगलों के मध्य स्थित है। चालकुड मुख्य शहर से यहां तक दूरी मात्र 36 कि.मी की होगी। अथिराप्पिल्ली से यहां तक की दूरी मात्र 5 की है। चलाकुडी भ्रमण पर निकले पर्यटक यहां आना पसंद करते हैं। बहते पानी की शोर बहुत दूर तक सुना जा सकता है। खासकर मॉनसून के दौरान यह जलप्रपात भंयकर रूप धारण कर लेता है, जल का वेग बढ़ जाता है, इसलिए बारिश के दिनों में अगर आप यहां आएं तो अपनी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखें।

-Y.B

National Sports Day 2020:मेजर ध्यानचंद कैसे बने हॉकी के जादूगर, जानिए उनसे जुड़ी 10 खास बातें

मेजर ध्यानचंद, वो नाम जिसे हॉकी दुनिया का जादूगर कहा जाता है। जब भी हॉकी खेल की बात आती है, तो उसमें मेजर ध्यानचंद का नाम सबसे पहले जहन में आ जाता है। ऐसा कहा जाता है कि उनके जैसा हॉकी खिलाड़ी ना पहले कभी था और ना ही आज कोई है। हॉकी स्टिक से उनकी कुछ ऐसी दोस्ती थी, कि जब भी कोई उन्हें खेलता देख ले, तो वो देखता रह जाता था। उन्हीं की बदौलत भारत तीन बार (1928, 1932 और 1936) हॉकी में ओलंपिक गेम्स में गोल्ड मेडल जीत पाया था। जिस समय वह हॉकी खेलते थे, उस समय को भारतीय हॉकी का स्वर्ण काल तक कहा जाता है।

श्हॉकी के जादूगरश कहा जाता था श्हॉकी के जादूगरश कहे जाने वाले मेजर ध्यानचंद में बॉल पर नियंत्रण करने की अद्भुत कला था। उन्होंने साल 1948 में हॉकी से अपने रिटायरमेंट की घोषणा की थी। उन्होंने अपने पूरे अंतरराष्ट्रीय करियर में 400 से अधिक गोल किए हैं। भारत सरकार ने उन्हें साल 1956 में पद्म भूषण से सम्मानित किया था। इसके साथ ही उनके जन्म दिवस 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है और इस दिन देश के राष्ट्रपति– राजीव गांधी खेल रत्न अवॉर्ड, अर्जुन अवॉर्ड और द्रोणाचार्य अवॉर्ड से खिलाड़ियों को सम्मानित करते हैं। हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की आत्मकथा श्गोलश साल 1952 में प्रकाशित हुई थी। तो चलिए अब इस महान खिलाड़ी से जुड़ी 10 खास बातें जान लेते हैं।

मेजर ध्यानचंद का खेल देख हिटलर भी हुए हैरान ध्यान सिंह 16 साल की उम्र में भारतीय सेना में शामिल हुए थे और वहां हॉकी खेलना शुरू कर दिया था। वह रात को भी प्रैक्टिस किया करते थे, जिसके बाद उनके साथी खिलाड़ियों ने उन्हें श्चंदश कहकर संबोधित करना शुरू कर दिया। एक बार मैच के दौरान ध्यानचंद विपक्षी टीम से एक भी गोल हासिल नहीं कर पाए थे। कई बार असफल होने के बाद, उन्होंने मैच रेफरी से गोल पोस्ट के माप के बारे में शिकायत की और फिर सच में ये पाया गया कि गोल पोस्ट की आधिकारिक चौड़ाई अंतरराष्ट्रीय नियमों के अनुसार नहीं थी। साल 1936 के बर्लिन ओलंपिक में भारत के पहले मैच के बाद, ध्यानचंद की जादुई हॉकी देखने के लिए हॉकी मैदान पर लोगों की भीड़ जमा होने लगी थी। तब जर्मनी के एक अखबार ने इस हेडिंग के साथ खबर प्रकाशित की थी– श्ओलंपिक कैंपस में अब एक जादू का शो है।श फिर अगले दिन बर्लिन की दिवारों पर पोस्टर लग गए, जिनपर लिखा था, श्हॉकी स्टेडियम जाओ और भारतीय जादूगर का जादू देखोश। जानकारी के अनुसार, एक बार जब हिटलर जर्मनी के खिलाफ हो रहे मैच में ध्यानचंद का खेल देख रहे थे, तो उन्होंने ध्यानचंद को जर्मनी में बसने का प्रस्ताव दिया और साथ ही कहा कि सेना भी उन्हें कर्नल की रैंक दी जाएगी। लेकिन ध्यानचंद ने मुस्कुराते हुए इस प्रस्ताव को अपनाने से इनकार कर दिया था। साल 1936 के ओलंपिक में जर्मनी के खिलाफ हो रहे मैच में गोलकीपर की हॉकी ध्यानचंद के मुंह पर लग गई थी, जिससे उनका दांत टूट गया था। तब वह प्राथमिक उपचार के बार दोबारा ग्राउंड पर लौटे और खिलाड़ियों से बोले की अब कोई गोल ना मारा जाए। उन्होंने ऐसा जर्मन खिलाड़ियों को ये बताने के लिए कहा था, कि बॉल पर कैसे नियंत्रण किया जाता है। उनके ऐसा कहने के बाद खिलाड़ बार बार बॉल जर्मनी के गोलपोस्ट पर ले जाते और फिर अपने कोर्ट में ले आते।

अमेरिका और जापान को हराया जब 1935 में हॉकी की टीम ऑस्ट्रेलिया में थी, तब ध्यानचंद की मुलाकात क्रिकेट खिलाड़ी डॉन ब्रैडमैन से हुई। ध्यानचंद का खेल देखने के बाद डॉन ब्रैडमैन ने कहा, श्वह हॉकी में उसी तरह गोल करते हैं जैसे क्रिकेट में रन बनाए जाते हैं।श ऐसा कहा जाता है कि वियना (ऑस्ट्रिया) के लोगों ने मेजर ध्यानचंद की मूर्ति तक बनवाई थी। जिसमें उनके चार हाथ और उनमें चार हॉकी स्टिक दिखाई गई थीं। जिसके जरिए उनकी बॉल पर मास्ट्री और स्टिक पर नियंत्रण को दिखाया गया था। हालांकि वर्तमान में ऐसी कोई मूर्ति मौजूद नहीं है और ना ही इससे संबंधित कोई दस्तावेज मौजूद हैं। नीदरलैंड में हॉकी स्टिक के अंदर चुंबक होने की संभावना के कारण अधिकारियों ने ध्यानचंद की हॉकी स्टिक को तोड़ दिया था। ध्यानचंद ने कई यादगार मैच खेले हैं। हालांकि उनका कहना था कि उनके लिए अपना सर्वश्रेष्ठ मैच 1933 में श्बेटन कपश के लिए हुआ मैच था। जो श्कलकत्ता कस्टमश और श्झांसी हीरोजश के बीच खेला गया था। 1932 में ओलंपिक में भारत ने अमेरिका और जापान को 24–1 और 11–2 से हराया था। इन 35 में से 12 गोल ध्यानचंद ने किए थे। वहीं उनके भाई रूप सिंह ने 13 गोल किए थे। इस शानदार खेल के लिए दोनों भाइयों को श्हॉकी ट्विन्सश तक कहा जाने लगा था।

डा.राधाकृष्णन –भारतीय दर्शन के व्याख्याता

समय–समय पर भारत में महान विभूतियों का जन्म होता रहा है, जिन्होंने अपनी प्रतिभा से समाज तथा देश नाम रोशन किया। ऐसे ही महापुरुषों में से एक डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन हैं जो बहुमुखी प्रतिभा के धनी होने के साथ–साथ महान शिक्षक भी थे, इसीलिए उनके जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

डा. राधाकृष्णन का जन्म 5 सितम्बर 1888 को चेन्नई से लगभग 80 किलोमीटर दूर चित्तूर जिले के तिरूतानी शहर के एक छोटे से सीान प्रागानाडू में हुआ था। पिता की प्रेरणा और माता के प्यार से राधाकृष्णन की बचपन से ही हिन्दू धर्म के प्रति गहरी दिलचस्पी होने लगी थी। इनके पिता वीरस्वामी एक आदर्श शिक्षकस्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की और उसी वर्ष उनकी नियुक्ति मद्रास के ही प्रेसीडेंयी कॉलेज में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर के पद पर हुई। उनकी योग्यता और अध्ययनकुशलता के कारण 1918 में उन्हें तीस वर्ष की आयु में ही मैसूर विश्वविद्यालय के आचार्य पद पर नियुक्त किया गया। 1921 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति आशुतोष मुखर्जी के निमंत्रण पर मैसूर में किंग जार्ज में प्रोफेसरशिप इन मेंटल एंड मॉरल फिलॉस्फी के पद पर नियुक्त किया गया।

1926 में विज़िटिंग प्रोफेसर के रूप में डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने हारवर्ड विश्वविद्यालय में आयोजित दर्शन कांग्रेस में भारत का प्रतिनिधित्व किया। वंहा जावेट, हास्कल आदि व्याख्यानमालाओं में भारतीय संस्कृति और धार्मिक मान्यताओं के संबंध में नवीन व्याख्याएं प्रस्तुत कर विदेशी वैज्ञानिकों को भी आश्चर्यचकित कर दिया। भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड इर्विन की संस्तुति पर उन्हें 1931 में नाईट की उपाधि प्रदान की गई।

एक उत्कृष्ट वक्ता के साथ–साथ डाराधाकृष्णन उच्चकोटि के लब्ध–प्रतिष्ठ लेखक एवं कुशाग्र बुद्धि के धनी व्यक्ति थे। उन्होंने एथिक्स एंड वेदांत एंड माई फिजिकल प्रोसपोसेशंस, भारतीय दर्शन, मनोविज्ञान की आवश्यकताएं, उपनिषदों का दर्शन, जीवन की हिंदू धारणा, जीवन की आदर्श धारणा, श्रीभागवद गीता, स्वतंत्रता और संस्कृति, विश्वास का पाना, महान भारतीय, ब्रह्मसूत्र और सत्य की खोज आदि अनेक पुस्तकें लिखीं।

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में 1936 में प्रोफेसर ऑफ ईस्टर्न रिलीजन्स एंड एथिक्स के पद पर नियुक्त होने वाले प्रथम भारतीय होने का गर्व उन्हें प्राप्त हुआ। उन्होंने 1937 में आंध्र विश्वविद्यालय का और उसके बाद अगस्त 1939 से 1948 तक काशी हिंदू विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद को सुशोभित किया। इसी वर्ष उन्हें यूनेस्को के अधिशासी मंडल का अध्यक्ष चुना गया और भारत सरकार ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अध्यक्ष भी नियुक्त किया। डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने 1909 में मद्रास विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में उन्हें संविधान सभा का सदस्य बनाया गया। अपने प्रथम भाषण में उन्होंने स्वराज्य शब्द की दार्शनिक व्याख्या की। डा. राधाकृष्णन को भारत सरकार ने 1949 में सोवियत संघ में राजदूत नियुक्त किया। वहां पर उन्होंने भारत–सोवियत मैत्री की सुदृढ़ आधारशिला रखी। 1952 में भारतीय गणतंत्र का प्रथम उपराष्ट्रपति चुना गया। 1954 में उन्हें भारत के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से अलंकृत किया गया। 13 मई 1962 को इस महान शिक्षाविद् एवं दार्शनिक ने भारत के द्वितीय राष्ट्रपति के पद को सुशोभित किया। जुलाई 1962 में उन्हें ब्रिटिश एकेडमी की ऑनरेरी फेलोशिप प्रदान की गई। डा. राधाकृष्णन की तुलना डा. बर्टेन्ड रसल,

जी. ई. भूरे एवं कार्ल जास्पर्स जैसे विश्व प्रसिद्ध दार्शनिकों में की जाती है। शिक्षण और शिष्य उन्हें सबसे ज्यादा प्यारे थे। जिसने भी उनसे शिक्षा ली वे आज भी शिक्षक के रूप में उन्हें सम्मान से याद करते हैं।

एक दार्शनिक होने के कारण डा. राधाकृष्णन के शैक्षिक दर्शन में धार्मिक, नैतिक एवं लोक कल्याणकारी विचारों का सामंजस्य, भारतीय संस्कृति के प्रति उदारभाव तथा विश्व बंधुत्व की भावना की प्रमुखता है। उनका उद्देश्य समाज को ऐसे श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित रूप में विकसित करना चाहते थे, जिससे प्रत्येक मनुष्य को अपनी योग्यता के अनुसार देश के विकास में योगदान का पूरा अवसर मिले। उनका मानना था कि मनुष्य के विचारों को श्रेष्ठ बनाने के लिए शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है और शिक्षा से शिष्ट, चरित्रवान तथा स्वावलंबी नागरिक तैयार होते हैं।

उनकी राय में संसार के सभी मनुष्य एक ही परिवार के सदस्य हैं। इसलिए हमें एक दूसरे की सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीयता की रक्षा करनी चाहिए। राष्ट्रपति पद का कार्यकाल पूरा करने के बाद वे मद्रास में रहकर दर्शनशास्त्र के अध्ययन–अनुशीलन में तल्लीन हो गए। 6 अप्रैल, 1975 को उन्हें दिल का दौरा पड़ा और डाक्टरों के अथक प्रयासों के बावजूद उनका 16 अप्रैल 1976 को उनका स्वर्गवास हो गया।

— राहुल मित्तल

Vol. 14 **No.** 9
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal,Bal Krishna Mishra responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"I do not consider it an insult, but rather a compliment to be called an agnostic. I do not pretend to know where many ignorant men are sure -- that is all that agnosticism means."

- Clarence Darrow

*****

"Obstacles are those frightful things you see when you take your eyes off your goal."

- Henry Ford

*****

"I'll sleep when I'm dead."

- Warren Zevon

*****

"There are people in the world so hungry, that God cannot appear to them except in the form of bread."

- Mahatma Gandhi

*****

Compilation:
Priya Kumari

WINNERS v/s LOOSERS Part-90

Winner always has a program
Loser always has an excuse.

*****

Winners are a part of the team;
Losers are apart from the team.

*****

Winners makes commitments;
Losers makes promises.

*****

Winners see possibilities;
Losers see problems.

*****

Winners have dreams;
Losers have schemes.

*****

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**